तिथि–10 जून 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-११४, वर्ष-१२
ज्येष्ठ, विक्रमी २०७६ (जून 2019)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः। इतो जातो वि श्वमिदं वि चष्टे वै श्वानरो यतते सूर्येण ॥ –ऋ० १। ७। ६। १

व्याख्यान–हे मनुष्यो ! जो (राजा हि) हमारा तथा सब जगत् का राजा, सब भुवनों का स्वामी, (कम्) सब का सुखदाता, और (अभिश्रीः) सब का निधि (शोभाकारक) है। (वैश्वानरो यतते सूर्येण) संसारस्थ सब नरों का नेता (नायक) और सूर्य के साथ हो वही प्रकाशक है, अर्थात् सब प्रकाशक पदार्थ उसके रचे हैं। (इतो जातो विश्वमिदं विचष्टे) इसी ईश्वर के सामर्थ्य से ही यह संसार उत्पन्न हुआ है, अर्थात् उसने रचा है। (वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम) उस वैश्वानर परमेश्वर की सुमति अर्थात् सुशोधन (उत्कृष्ट) ज्ञान में हम निश्चित सुखस्वरूप और विज्ञानवाले हों। हे महाराजाधिराजेश्वर! आप इस हमारी आशा को कृपा से पूरी करो ॥

सम्पादकीय

नई सरकार-नये उत्तरदायित्व

हम सभी इस तथ्य से भलीभांति सुपरिचित हैं कि सत्रहवीं लोकसभा के मुख्य निर्वाचन के संपन्न होने और स्पष्ट परिणाम आने के उपरान्त नवनिर्वाचित कुछ पुराने और कुछ नए मंत्रियों के साथ श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार ने फिर से अपना कार्यभार संभाल लिया है और इसके साथ प्रारंभ हो गया है सरकार का नया उत्तरदायित्व। हम सभी इस तथ्य से भी सुपरिचित हैं कि यह वर्तमान सरकार जिस प्रचंड बहुमत को प्राप्त करके आई है उसमें राष्ट्रवाद मुख्य रूप से गुंजायमान रहा है, राष्ट्रवाद में भी 'राष्ट्रीय सुरक्षा' को ही सर्वोपरि रखा गया। परिणाम स्वरूप देश की जनता ने बहुत से नकारात्मक विषयों की उपेक्षा कर भारी संख्या में मतदान किया, जिसमें बहुत से क्षेत्रीय क्षत्रप नष्टप्राय हो गए। इस स्थिति को बहुत से लोग विभिन्न पहलुओं से देख रहे हैं किंतु हमें इसमें एक शुभ संकेत दिखाई देता है कि जनता टुकड़ों में सोचने वालों की अपेक्षा व्यापक स्तर पर सोचने वाले को पसंद करने लगी है। दूसरा जनता अपनी सुरक्षा चाहती है। इस पर एक प्रश्न पुनः उठ खड़ा होता है कि- क्या जनता मात्र विदेश की सीमाओं पर सुरक्षा चाहती हैं, मात्र बाह्य आतंकवाद का खात्मा चाहती है, तो जो भीतरी असुरक्षा है, जो भीतरी आतंकवाद है, क्या जनता इसे सहन करती रहेगी? क्या ट्विंकल शर्मा की निरीह हत्या आतंक नहीं है? क्या यह जनता की सुरक्षा पर सेंधमारी नहीं है? क्या इस पर पैशाचिक कृत को आतंक की श्रेणी में नहीं गिनना चाहिए? क्या उत्तर प्रदेश की योगी जी की सरकार इसे उसी प्रकार के संगीन अपराध में रखेगी? क्या नवनियुक्त केंद्रीय गृह मंत्री इस पर और देशभर में इसी प्रकार के घटने वाले अपराधों पर अपनी कोई स्पष्ट नीति बनाएंगे? क्या सभी राज्य सरकारों के साथ मिलकर पारिवारिक सामाजिक ताने-बाने की सुरक्षा के लिए कोई सुस्पष्ट त्वरित न्यायपूर्ण पारदर्शी कार्यवाही की विधि स्थापित होगी? देश की भीतरी क्षेत्र में पिछले ५ वर्षों में यदि देखा जाए तो बाहरी आतंकियों द्वारा कहीं बम विस्फोट या खुला फायर जैसे दुर्दांत घटनाएं देखने में नहीं आई, इसके लिए सरकार का परिश्रम प्रशंसनीय रहा है। किंतु केंद्रीय सरकार की नाक के नीचे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में जैसे दिनदहाड़े हत्याएं हुई हैं घिनौने बलात्कार हुए हैं, छोटे-छोटे लुटेरों के गिरोह (गैंग) ने जो दहशत फैलाई है, जो खुली सड़कों पर खूनी खेल खेल रहे हैं और इसके साथ ही संपूर्ण देश में जो अराजकता, अव्यवस्था, अशांति रही है उसमें हमारे माननीय पूर्व गृहमंत्री असफल ही रहे हैं अब नए गृहमंत्री क्या कर पाते हैं यह नयी सरकार के नये उत्तरदायित्व में शीर्ष पर आंका जाने वाला उत्तरदायित्व होगा। छोटे-छोटे मासूम बच्चों पर क्रूरतापूर्ण घिनौने अपराध नित नये-नये रूपों में जनता के सामने आ रहे हैं अंग भंग करना, अपहरण करना, यौन शोषण करना और नृशंह हत्या कर देना एक सामान्य सी सनसनी बनकर रह जाती है। जनता का आक्रोश मात्र क्षणिक बनकर रह जाता है, सरकार को इसे प्राथमिक स्तर पर देखना, सोचना और निराकरण

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

करना होगा।

शिक्षा व्यवस्था में सुधार का डिम्-डिम् घोष हम पिछले ५ वर्षों में दो माननीय मानव संसाधन विकास मंत्रियों के श्रीमुख से सुनते आ रहे हैं, अब नयी सरकार के नए मंत्री इस सुधार को कितने सुधार के साथ घोषित करेंगे? इस यक्ष प्रश्न का भी उत्तरदायित्व इस सरकार पर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मनुष्य के उपरांत प्राणी मात्र की नष्ट होती प्रजातियां, लुप्त होते प्राणी समुदाय, मनुष्य कहलाने वाले जीव की मांसाहार की ओर बढ़ती दुष्टवृत्ति, परिणामस्वरूप नष्ट होती जैव विविधता, विकास के लिए नष्ट होते जंगल, वृक्ष, वनस्पतियां, औषधियां। परिणामस्वरूप नष्ट होता हुआ शुद्ध वायुमंडल, और गहरे से गहरा और भी गहरा रसातल को पहुंच चुका भूजल स्तर इस नई सरकार के नये उत्तरदायित्व में सर्वोपरि है। देखना है यह इन उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर पाते हैं या नहीं। इसके साथ ही हम पाठकगणों एवं समालोचकों का भी उत्तरदायित्व है कि नई सरकार को कुछ समय दें। (जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि वें 'सबका विश्वास' जीतेंगे। भयग्रस्त, संशयग्रस्त दूसरे राजनैतिक दलों द्वारा भ्रम में डाले गये अल्पसंख्यकों के भय में भी छेद करेंगे।) कुछ अपनी योजनाओं पर कार्य करें! कुछ पुरुषार्थ करें! समाज हित-समाज सेवा करें! कुछ नए सृजनात्मक सामाजिक-राष्ट्रीय आंदोलनों की रूपरेखा बनाएं! समाज और राष्ट्र को कुछ दें! समाज के सम्मुख एक सुदृढ़ विकल्प बनकर खड़े हों। तभी आलोचना-समालोचना का लाभ होगा अन्यथा सोशल मीडिया पर नित्य नयी सरकार बनाने और बिगाड़ने से कुछ ना बनेगा और विकल्पहीनता की स्थिति में जनता को फिर ऐसी सरकारें बनानी पड़ेंगी जो अपने उत्तरदायित्व के प्रति उत्तरदायी नहीं, अपितु उत्तरदायित्वमुक्त सरकारें होंगी।

आइए! उत्तरदायित्वपूर्ण परिश्रम करें! एक व्यापक विचारशील समाज का निर्माण करते हुए नवसृजन करें!

विद्या तथा अविद्या -आचार्य सतीश

विद्या तथा अविद्या का संघर्ष सदा चलता रहता है। जब विद्या की अधिकता होगी तब सुख होता है, स्वतन्त्रता व समृद्धि होती है। लेकिन जब अविद्या की अधिकता होती है तो वहां दुख होता है, दूसरे की अधीनता होती है, दुर्दशा होती है। वर्तमान में ही नहीं अपितु लम्बे काल से हमारे देश में विद्या का ह्रास रहा है तथा अविद्या अधिक रही है और उसी अनुपात में हमें दुख व सुख मिलता रहा है। लम्बे काल तक अविद्या का बोल-बाला रहा, विद्या लुप्त प्राय रही। ऋषि दयानन्द ने विद्या को फिर स्थापित करना प्रारम्भ किया जिससे राष्ट्र की स्थिति कुछ बदली। लेकिन अविद्या निरन्तर प्रयासरत है विद्या को फिर से दास बनाने को। लेकिन आर्य लोग भी प्रयासरत हैं विद्या को बढ़ाने में।

विद्या प्रत्येक में सन्तुलन, श्रेष्ठता व धैर्य लाती है, निरन्तर संघर्ष की प्रेरणा देती है क्योंकि उसमें समृद्धि है, सुख, स्वतन्त्रता है, उन्नति है। अविद्या का बढ़ना तथा विद्या का ह्रास दोनों अभिशाप हैं। कभी-कभी भावना के जोश से कुछ कार्य सिद्ध हो जाते हैं लेकिन यह जोश दूध के उफान की तरह होता है और इससे सुधार कार्य की बड़ी हानि होती है, बड़े-बड़े कार्य अधूरे रह जाते हैं या बड़ा विलम्ब हो जाता है। जोश तथा भावना को संयत करने के लिये यदि विद्या नहीं है तो इससे भी हानि होती है। अविद्या दूर हो, विद्या का प्रसार हो यही हमारा संकल्प हो। यही कार्य ऋषि ने किया, यही कार्य आर्य निर्माण के प्रकल्प द्वारा किया जा रहा है। विद्या को प्रसारित किया जा रहा है, अविद्या का नाश किया जाता है। यह विद्या ही सब समस्याओं का समाधान है, अविद्या सब समस्याओं का मूल है। आओ सभी मिलकर संकल्प लें कि विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करें। यही हमारा लक्ष्य हो बाकि का कार्य तो विद्या प्राप्त जन कर ही ले जाऐंगे।

बाधाएँ तो फिर आएंगी छा जाएंगी बन कराल सी ।

बाधाएँ तो फिर आएंगी छा जाएंगी बन कराल सी ।
दयानंद सी एक प्रेरणा पुनः चाहिए उषःकाल सी ।।
बाधाएँ दिन प्रति उपजाति घनी निराशा अंधकार सी ।
मानव पग तब हो जाते हैं बद्ध-बद्ध से भारी भारी ।
आशा का प्रकाश पुनः वह कर जाती है यज्ञाग्नि सी ।।१।।
प्रशांत शांत से चितवन पर जब खर- दूषण सी हो अशान्ति ।
रावण सा हो उनका संबल खिजा रही हो मेघनाद सी ।
तब पावन सीता मां बन सहसा उठ आती रामबाण सी ।।२।।
प्रजा जनों के मार्ग सरल जब रोक खड़ी हो कंसराज सी ।
भीष्म द्रोण स्तब्ध-मौन हों शासन शक्ति दुः अंगराज सी ।
वासुदेव के उपदेशों में उठ आती गांडीव धरे फिर कौंतेय सी ।।३।।
बाधाएं जब यातनाएं बन चढ़ आाएं घर अलर्केंद्र सी ।
हम तिनका तिनका बिखरे हों अंध दर्शिता दूर प्रवृत्ति आंभिराज सी ।
अपमानों की भट्टी से वह पुनः उपजती आचार्य चणक के विष्णुगुप्त सी।।४।।
बाधाएं जब औरंगजेबी अत्याचारी रूप धार लें ।
नर मुंडो का खेल बना वें अपमानित करने को ठान लें ।
जीजाबाई बन दिखती हो वीर शिवा के स्वाभिमान सी ।।५।।
जब अपने ही इधर-उधर जा संहारक बनकर बैठे हो ।
अपनों का अपमान करें और अपने ही मन में ऐंठे हों ।
तब निश्चय का रूप धरे वह पुनः मिलेगी श्रद्धानंद से महाप्राण सी।।६।।

-आचार्य संजीव, मु०नगर, उत्तर प्रदेश

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	03 जून	दिन-सोमवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-रोहिणी
पूर्णिमा	17 जून	दिन-सोमवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा
अमावस्या	02 जुलाई	दिन-मंगलवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-मृगशिरा
पूर्णिमा	16 जुलाई	दिन-मंगलवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वषा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा

आर्य प्रचारक कक्षा का आयोजन

जब तक प्रत्येक आर्य आर्यप्रचार के कार्य को नहीं करता है, तब तक इन सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाना एक कठिन कार्य है। सिद्धांतों को अन्यों को बताया जा सके, सिखाया जा सके, उनका प्रचार व प्रसार किया जा सके उसके लिए आवश्यक है एक आर्य के अन्दर सिद्धांतों की समझ, कार्य करने की लगन व आर्य सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा भाव। यह सब योग्यता एक आर्य को प्राप्त हो, इसके लिए ही समय-समय पर आर्य प्रचारक कक्षाओं का आयोजन आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय में किया जाता है। इसी के अंतर्गत *2* जून से *9* जून *2019* तक इस कक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें *49* आर्य प्रचारकों ने पाठ्यक्रम को पूर्ण किया। वह योग्यता अर्जित की जिससे वे आर्य सिद्धांतों का प्रचार प्रसार कर सकें। यह सभी प्रचारक युवा ब्रह्मचारी या गृहस्थ हैं। जब एक गृहस्थ इस प्रकार प्रचार-प्रसार का कार्य करता है तो उसका और अधिक प्रभाव समाज पर व उसके संपर्क में आने वाले लोगों पर पड़ता है। कक्षा का आयोजन आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय चित्तौड़ा झाल मुजफ्फरनगर में किया गया। कक्षा की समाप्ति के बाद परीक्षा भी ली गई। आचार्य सतीश जी, आचार्य संजीव जी, आचार्य धर्मपाल जी द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया गया तथा अंतिम दिवस आचार्य हनुमत प्रसाद के उद्बोधन के साथ कक्षा समाप्त हुई।

आर्य प्रचारक की अगली कक्षा का आयोजन *5* जनवरी से *12* जनवरी *2020* तक किया जाएगा।

छात्र गुरुकुलों का आयोजन

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के द्वारा विभिन्न स्थानों पर पंचदिवसीय व अष्टदिवसीय छात्र गुरुकुलों का आयोजन जून मास में किया जा रहा है। छात्र सभा इसके माध्यम से छात्रों को वैदिक सिद्धान्त व संस्कार सिखाने का कार्य कर रही है। हमारे परिवारों के बालक श्रेष्ठ गुणों को धारण कर सकें इसी उद्देश्य से इन गुरुकुलों का आयोजन किया जा रहा है। इन गुरुकुलों में अनेकों छात्र वैदिक सिद्धान्त सीखकर अपने परिवारों में श्रेष्ठ परम्परा को स्थापित करने में सहयोग देंगे। आर्य छात्र सभा वर्ष भर विद्यालयों में जाकर व इस अवकाश के समय छात्रों को अपने पास बुलाकर योग्य बना रही है।

वैदिक सहित्य में पर्यावरण संरक्षण

-सोनू आर्य, हरसौला (कैथल)

वेदों को समग्र ज्ञान-विज्ञान का स्रोत मानने वालों के लिए यह असम्भव नहीं है कि वेद विज्ञान पर आधरित विभिन्न प्रकार के घातक अस्त्र-शस्त्र, रसायन विद्या, विमान, धातु विज्ञान, विभिन्न उपकरण एवं तकनीकी प्राचीन भारत (महाभारत से काफी समय पश्चात् तक) में विद्यमान रही। किन्तु फिर भी प्राचीन ग्रन्थों विशेषकर रामायण पर आधारित रामराज्य से विदित होता है कि उस काल में सब सुखी, स्वस्थ एवं सन्तोषी थे। पिता के आगे पुत्र की मृत्यु नहीं होती थी (युद्ध को छोड़कर)। वर्षा समय पर होती थी। सम्पूर्ण भू-भाग धन धान्य से परिपूर्ण था क्योंकि ऋतु-चक्र सन्तुलित था जिस कारण भयंकर रोग अथवा असमय मृत्यु का ग्रास कोई नहीं बनता था अर्थात् पर्यावरण प्रदूषण का नाम न था। हमारे पूर्वजों ने सम्पूर्ण भूमण्डल को परिवार (वसुधैव कुटुम्बकम्) मानकर "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।। अर्थात् सब सुखी हों, सब निरोगी हों का स्वप्न देखा था। महाभारत में अन्तिम क्षणों में आजन्म ब्रह्मचारी महान योद्धा गंगापुत्र पितामाह 'देवव्रत' भीष्म जी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर मेरी मातृभूमि को धूप, छांव, वर्षा की कभी कमी न रहे। इसके खेत-खलिहान, वृक्ष लहलहाते रहें। इसके जलाशय सदैव भरे एवं स्वच्छ रहें। पूर्वोक्त प्राकृतिक संसाधनों की पूर्णता, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का आधार निश्चित रूप से पर्यावरण का सन्तुलित चक्र है। और पर्यावरण का यह सन्तुलन तभी तक है जब तक प्रकृति को भोगवादी दृष्टिकोण की बजाय मातृरुप में आदर की दृष्टि से देख जाए जैसा कि लगभग दो पीढ़ी पूर्व (एक हमारी और एक पिता वाली) तक हमारे पूर्वज देखते थे। सुधि पाठकगणों को यह विचार निर्माण हेतु कि प्रकृति के प्रति चेतना भारतीय चिन्तन में मौलिक सिद्धान्त है, उपरोक्त वर्णन पर्याप्त है।

भारतीय दृष्टिकोण आधुनिक दृष्टिकोण की भान्ति केवल सैद्धान्तिक नहीं अपितु व्यावहारिक है। पर्यावरण संरक्षण का विचार हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जिस कारण भारतीयों ने इसे सींचा है, व्यवहार में उतारा है। वैदिक साहित्य के ब्राह्मण ग्रन्थों में ३३ कोटि देवताओं का वर्णन आता है। जिसमें आठ वसुओं (बसाने वाले) अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश, को भी देवता (देने वाले) माना गया है इनसे यथायोग्य व्यवहार करना अर्थात् सदुपयोग करना और विकृतिकरण से उन्हें बचाने की आज्ञा हमारे ऋषि-महर्षियों ने दी। हम युक्तियुक्त उपयोग इन प्राकृतिक देवताओं का लेते थे किन्तु इनके संरक्षण के प्रति भी सजग थे। गौकरुणानिधि पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि "आर्यवर्तीय राजा, महाराजा, प्रधान और धनाढ्य लोग आधी पृथ्वी पर जंगल रखते थे कि जिससे पशु-पक्षियों की रक्षा होकर औषधियों का सार दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हों।" न केवल वृक्षों को रखते अपितु स्वास्थ्य और अन्ततः जीवन इनके बिना सम्भव नहीं की सोच के कारण वृक्षों से आत्मीयता का सम्बन्ध भी रखते थे। जैसे- तुलसी का पौधा जिसके बहुत से औषधीय गुण हैं और विज्ञानानुसार एकमात्र ऐसा पौधा जो जितना पानी लेगा, तत्काल उसमें से ऑक्सीजन अलग करके वातावरण में छोड़ देता है, को हमारे पूर्वजों ने अपनी दिनचर्या में जोड़ा। इसी प्रकार हमारे देश में पीपल के वृक्ष को शुद्ध और सम्मानित समझा जाता है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार पीपल सर्वाधिक ऑक्सीजन (सम्भवतः एक बार में २०० मनुष्यों हेतु) छोड़ता है ताकि पीपल की रक्षा होती रहे। मध्यकाल में बहुत लोगों के द्वारा भूत-प्रेत एवं अन्य कथाओं का सम्बन्ध पीपल से जोड़ दिया गया। हालांकि भूत-प्रेतादि की कथा वास्तविकता न होकर पूर्णतः बेबुनियाद है।

स्पष्ट है हमने कभी प्रकृति के विकृतिकरण अथवा अतिक्रमण की चेष्टा नहीं की। जब जब चेष्टा हुई तब-तब किसी विद्वद्जन ने हस्तक्षेप करके उसे रूकवाया।

जिन घातक हथियारों का संकेत उपर किया गया है से सम्बन्धित दो दृष्टान्त महाभारत में आते हैं। महाकाव्य में जब अम्बा से विवाह को लेकर गंगापुत्र भीष्म एवं परशुराम जी का युद्ध होता है तो परशुराम को हराने के लिए भीष्म जी किसी दिव्यास्त्र को छोड़ने का विचार करते हैं। तभी आकाशवाणी (संभवत कोई विद्वान) उन्हें रोकता है कि यह अस्त्र युद्ध में प्रयोग न करें। प्राणिमात्र के अस्तित्व का संकट इससे संभव था। इसी प्रकार जब महाभारत युद्ध के उपरान्त द्रोणपुत्र अश्वत्थामा द्रोपदी पुत्रों की हत्या करके भाग जाता है तो पाण्डव उसे खोजते हुए महर्षि व्यास के आश्रम पहुंचते हैं। पाण्डवों को देखते ही अश्वत्थामा ब्रह्मास्त्र छोड़ता है उसके निवारण हेतु योगीराज श्री कृष्ण के कहने पर अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र छोड़ देते हैं। किन्तु तभी महर्षि व्यास दोनों को अपने ब्रह्मास्त्र लौटाने के लिए इसलिए कहते हैं कि उनके प्रयोग से जीवन के नष्ट होने की संभावना थी। यहीं नहीं अनेक ब्रह्मास्त्रों का वर्णन महाभारत में है किन्तु पूरे युद्ध में किसी भी पक्ष की और से उनका प्रयोग नहीं किया गया। जो पुनः हमारे उस विचार की पुष्टि करता है कि आर्य लोग पर्यावरण के प्रति कितने सजग रहे हैं। जब कभी नितान्त जरुरत में पृथ्वी के अतिक्रमण की जरूरत पड़ी वहां गहरा भाव कृतज्ञता का प्रकट किया-

हे धरती माता! मैं ना तो तुम्हें हानि पहुचाऊँ और ना ही तुम्हारा अतिक्रमण करुं। जहां भी तुम्हारा खनन करूं वहां शीघ्रता से पुर्नरचना हो जाए तथा क्षेत्र हरित आवरण से ढक जाए। **"माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्या"** भूमि माता मैं पुत्र हूँ। यज्ञ का मुख्य प्रयोजन ही यह है कि इसमे सामग्री रूप में डाली गई औषधियाँ व अन्य पदार्थ सूक्ष्म रूप होकर वातावरण से दुर्गन्ध का नाश करके वायु को शुद्ध करें। जिससे अन्न जल तथा औषधियां आदि पदार्थ शुद्धि को प्राप्त हों। अब विभिन्न शोधों के नतीजों के फलस्वरूप अनेक पाश्चात्य व आधुनिक विद्वान् हवन की पर्यावरणीय महत्ता को मानने लगे हैं।

एक विशेष बात यह है कि हवन में आहुति देते समय स्वाहा शब्द बोलते हैं। भाषा एवं व्याकरण की दृष्टि से इसका जो अर्थ हो सो हो किन्तु स्वाहा के साथ अग्नि में पदार्थ छोड़ने से इस शब्द का अर्थ आहुत करना या बलिदान करना एकदम से ध्यान में आता है। मतलब यह कि वर्तमान में भी जो आर्य परिवार है वह स्वाहा का यानि त्याग, तपस्या का जीवन जीने में विश्वास करते हैं भोगवादी जीवन में नहीं। यह भोगवादी जीवन ही प्रदूषण का जनक है। भोगवाद के कारण ही हमारे पिता वाली पीढ़ी स्वाहा के बजाय आहा के जीवन यानि आनन्दमय जीवन में विश्वास करने लगी। जिस कारण आज परिस्थितियां और बिगड़ गई। आज केवल आह (आनन्द) का ही प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है स्वाहा का नहीं। लेकिन मुझे अच्छे से मेरे पितामाह की एक दिन की बात स्मरण है। वह ये कि वृक्षों मे भी जीवन है, काटकर देख लो तभी सूखने लगेगा और यह कहते ही उन्होंने एक लड़के को पास के वृक्ष जिसकी छाया में वह लैटे थे झाड़ू से उसका जाला साफ करने को कहा। केवल यह उदाहरण नहीं अपितु हमारे पितामह वाली पीढ़ी तक हम वृक्षों, जल एवं वायु को भी सम्मान देते थे। जल की जितनी जरूरत उतना ही और विशेष बात यह कि उनके समय तक तालाबों का पानी पीने के लायक था जबकि आज विभिन्न उपकारणों से निकाला जानेवाला और शोधित करके पीने वाले जल में भी कैंसर बता दी जाती है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि वेदों से लेकर महाभारत तक अनेक ग्रन्थों में हमारी महान परम्पराओं व जीवनचर्या में पर्यावरण के प्रति आत्मीयता व सम्मान का भाव रहता था। हमारे पितामहों के समय तक जब तक हमारा विश्वास स्वाहा वाली दिनचर्या में रहा और जब हमारे पिता से लेकर आज तक की पीढ़ी आह के विश्वास वाली भोगवादी जिन्दगी जीने लगी तो पर्यावरण प्रदूषण गम्भीर स्तर तक पहुंच चुका है।

जार्नल ऑफ इन्डस्ट्रियल इकॉलॉजी में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट के अनुसार अंग्रेजों का खानपान पर्यावरण के लिए अधिक हानिकारण है क्योंकि इसमें अधिक पानी की खपत व ग्रीन हाउस गैसों का अधिक उत्सर्जन होता है। अब देखा देखी भारतीय भी आह यानि आनन्द के लिए अन्धाधुन्ध अंग्रेजी भोजन खा रहे हैं। पर्यावरण की खपत व ग्रीन हाउस गैसों का अधिक उत्सर्जन होता है पर्यावरण प्रदूषण तो होगा ही।

अतः यदि पर्यावरण प्रदुषण से निपटकर पर्यावरण को जीवन योग्य बनाए रखना है तो पुनः आह वाली जीवन शैली छोड़कर स्वाहा का जीवन जीना पड़ेगा। पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन हेतु हम अपने पूर्वजों द्वारा निर्धारित श्रेष्ठ परम्पराओं का निर्वहन करें एवं वेदों की और लौटने हेतु संकल्पबद्ध हों।

पेड़ लगाएं, यज्ञ रचाएं, जल बचाएं।

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

(**प्र०**) विद्या पढ़ते समय वा पढ़के किसी दूसरे को पढ़ावें वा नहीं ?

(**उ०**) बराबर पढ़ाता जाए। क्योंकि पढ़ने से पढ़ाने में विद्या की वृद्धि अधिक होती है। पढ़के आप अकेला विद्वान् रहता, और पढ़ाने से दूसरा भी हो जाता है। उत्तरोत्तर काल में विद्या की वृद्धि होती ही है। जो विद्या को प्राप्त होता है, वह मनुष्य परोपकारी, धार्मिक अवश्य होता है। क्योंकि जैसे अन्धा कुएँ में गिर पड़ता है, वैसे देखनेहारा कभी नहीं गिरता। और अविद्या की हानि होने आदि प्रयोजन पढ़ाने से ही सिद्ध होते हैं।

[क्षुद्रबुद्धि और शूद्र का संवाद]

क्षुद्रबुद्धिरुवाच- सभी विद्वान् हो जावेंगे, तो हमको कौन पूछेंते? और आप ही आप सब पुस्तकों को बांचकर अर्थ समझ लेंगे। पूजापाठ में भी न बुलावेंगे। विशेष विघ्न धनाढ्य और राजाओं के पढ़ाने में है। क्योंकि उनसे हम लोगों की बड़ी जीविका होती है

जब किसी शूद्र ने उनके पास पढ़ने की इच्छा से जाके कहा कि मुझको आप कुछ पढ़ाइए। तो-

अल्पबुद्धि-तू कौन है? क्या काम करता है? और तेरे घर में क्या व्यवहार होता है?

दास-मैं तो महाराज! आपका दास शूद्र हूँ। कुछ जिमींदारी खेतीबाड़ी भी होती है, और घर में कुछ लेन-देन का भी व्यवहार है।

नष्टमति-छी छी छी!!! तुझ को सुनने और हमको सुनाने का भी अधिकार नहीं है। जो तू अपना धर्म छोड़कर हमारा धर्म करेगा, तो क्या नरक में न पड़ेगा? हाँ, तुझको वेदों से भिन्न ग्रन्थों की कथा सुनने का तो अधिकार है। जब तेरी सुनने की इच्छा हो, तब हम को बुला लेना, सुना देंगे। परन्तु आप से आप मत बांच लेना, नहीं तो अधर्मी हो जावेगा, जो कुछ भेंट-पूजा लाया हो, सो धरके चला जा। और सुन, हमारे वचन को मान ले, नहीं तो तेरी मुक्ति कभी नहीं होगी। खूब कमा और हमारी सेवा किया कर। इसी में तेरा कल्याण, और तुझपर ईश्वर प्रसन्न होगा।

(**दास**) महाराज! मुझ को तो पढ़ने की बहुत इच्छा है। क्या विद्या का पढ़ना बुरी चीज़ है कि दोष लग जाए? (**बकवृत्ति**) बस-बस, तुझ को किसी ने बहका दिया है, जो हमारे सामने उत्तर-प्रत्युत्तर करता है। हाय! क्या करें? कलियुग आ गया। विद्या को पढ़कर हमारा उपदेश नहीं मानते, बिगड़ गये।

(**दास**) क्या महाराज! हमारे ही ऊपर कलियुग ने चढ़ाई कर दी कि जो हम ही को पढ़ने और मुक्ति से रोकता है? (**स्वार्थी**) हाँ हाँ! जो सतयुग होता, तो तू क्या हमारे सामने ऐसा बक-बक कर सकता ?

दास-अच्छा तो महाराज जी! आप नहीं पढ़ाते, तो हमको जो कोई पढ़ावेगा उसके चेले हो जावेंगे। (**अन्धकारी**) सुन-सुन। कलियुग में और क्या होना है? (**दास**) आपकी हम सेवा करें, उसके बदले आप हमको क्या देंगे ? (**मार्जारलिंगी**) आशीर्वाद । (**दास**) उस आशीर्वाद से क्या होगा? (**धूर्त**) तुम्हारा कल्याण। (**दास**) जब आप हमारा कल्याण चाहते हैं, तो क्या विद्या के पढ़ने से अकल्याण होता है? (**पोप उवाच**) अब क्या तू हम से शास्त्रार्थ करता है?

(**प्र०**) '**पोप**' का क्या अर्थ है?

(**उ०**) यह शब्द अन्य देश की भाषा का है। वहाँ तो इसका अर्थ पिता और बड़े का है, परन्तु यहाँ जो केवल धूर्तता करके अपना मतलब सिद्ध करनेहारा हो, उसी का नाम है।

(**प्र०**) जो विद्या पढ़ा हो, और उसमें धार्मिकता न हो, तो उसको विद्या का फल होगा वा नहीं?

(**उ०**) कभी नहीं। क्योंकि विद्या का यही फल है कि जो मनुष्य को धार्मिक होना अवश्य है। जिसने विद्या के प्रकाश से अच्छा जानकर न किया, और बुरा जानकर न छोड़ा, तो क्या वह चोर के समान नहीं है? क्योंकि जैसे चोर भी चोरी को बुरी जानता हुआ करता है, और साहूकारी को अच्छी जानके भी नहीं करता, वैसे ही जो पढ़के भी अधर्म को नहीं छोड़ता, और धर्म को नहीं करनेहारा मनुष्य है।

(**प्र०**) जब कोई मनुष्य मन से बुरा जानता है, परन्तु किसी विशेष भय आदि निमित्तों से नहीं छोड़ सकता, और अच्छे काम को नहीं कर सकता, तब भी क्या उसको दोष वा गुण होता है, अथवा नहीं ?

(**उ०**) दोष ही होता है। क्योंकि जो उसने अधर्म कर लिया उसका फल अवश्य होगा। और जानकर भी धर्म को न किया, उसको सुखरूप फल कुछ भी नहीं होगा। जैसे कोई मनुष्य कुएँ में गिरना बुरा जानके भी गिरे, क्या उसको दुःख न होगा? और अच्छे मार्ग में चलना उत्तम जानकर भी न चले, उसको सुख कभी होगा? इसलिए-

यथा मतिस्तथोक्तिर्यथोक्तिस्तथा मतिः ।
सत्पुरुषस्य लक्षणमतो विपरीतमसत्पुरुषस्येति ॥

[सत्पुरुष और असत्पुरुष का लक्षण]

वही '**सत्पुरुष**' का लक्षण है कि जैसा आत्मा का ज्ञान वैसा वचन, और जैसा वचन वैसा ही कर्म करना। और जिसका आत्मा से मन, उससे वचन और वचन से विरुद्ध कर्म करना है, वही '**असत्पुरुष**' का लक्षण है।। इसलिए मनुष्यों को उचित है कि सब प्रकार का पुरुषार्थ करके अवश्य धार्मिक हों।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

19 मई– 17 जून 2019 **ज्येष्ठ** ऋतु– ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
ज्येष्ठा शुक्ल पूर्णिमा 17 जून						अनुराधा कृष्ण प्रतिपदा 19 मई
ज्येष्ठा कृष्ण द्वितीया 20 मई	मूल कृष्ण तृतीया 21 मई	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 22 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण पंचमी 23 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 24 मई	श्रवण कृष्ण षष्ठी 25 मई	धनिष्ठा कृष्ण सप्तमी 26 मई
शतभिषा कृष्ण अष्ठमी 27 मई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण नवमी 28 मई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण दशमी 29 मई	रेवती कृष्ण एकादशी 30 मई	अश्विनी कृष्ण द्वादशी 31 मई	भरणी कृष्ण त्रयोदशी 1 जून	कृतिका कृष्ण चतुर्दशी 2 जून
रोहिणी कृष्ण अमावस्या 3 जून	मृगशिरा शुक्ल प्रतिपदा 4 जून	आर्द्रा शुक्ल द्वितीया 5 जून	पुनर्वसु शुक्ल तृतीया 6 जून	पुष्य शुक्ल चतुर्थी/पंचमी 7 जून	आश्लेषा शुक्ल षष्ठी 8 जून	मघा शुक्ल सप्तमी 9 जून
पू० फाल्गुनी शुक्ल अष्ठमी 10 जून	उ० फाल्गुनी शुक्ल नवमी 11 जून	हस्त शुक्ल दशमी 12 जून	चित्रा शुक्ल एकादशी 13 जून	स्वाती शुक्ल द्वादशी 14 जून	विशाखा शुक्ल त्रयोदशी 15 जून	अनुराधा शुक्ल चतुर्दशी 16 जून

18 जून–16 जुलाई 2019 **आषाढ़** ऋतु– वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	मूल कृष्ण प्रतिपदा 18 जून	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण द्वितीया 19 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण तृतीया 20 जून	श्रवण कृष्ण चतुर्थी 21 जून	धनिष्ठा कृष्ण पंचमी 22 जून	शतभिषा कृष्ण षष्ठी 23 जून
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण सप्तमी 24 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण अष्ठमी 25 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण नवमी 26 जून	रेवती कृष्ण नवमी 27 जून	अश्विनी कृष्ण दशमी 28 जून	भरणी कृष्ण एकादशी 29 जून	कृतिका कृष्ण द्वादशी/त्रयोदशी 30 जून
रोहिणी कृष्ण चतुर्दशी 1 जुलाई	मृगशिरा कृष्ण अमावस्या 2 जुलाई	आर्द्रा/पुनर्वसु शुक्ल प्रतिपदा 3 जुलाई	पुष्य शुक्ल द्वितीया 4 जुलाई	आश्लेषा शुक्ल तृतीया 5 जुलाई	मघा शुक्ल चतुर्थी 6 जुलाई	पू० फाल्गुनी शुक्ल पंचमी 7 जुलाई
उ० फाल्गुनी शुक्ल षष्ठी/सप्तमी 8 जुलाई	हस्त शुक्ल अष्टमी 9 जुलाई	चित्रा शुक्ल नवमी 10 जुलाई	स्वाती शुक्ल दशमी 11 जुलाई	विशाखा शुक्ल एकादशी 12 जुलाई	अनुराधा शुक्ल द्वादशी 13 जुलाई	ज्येष्ठा शुक्ल त्रयोदशी 14 जुलाई
मूल शुक्ल चतुर्दशी 15 जुलाई	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पूर्णिमा 16 जुलाई					

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

Fearing some disturbance, the admirers of Swamiji suggested that he should deliver his lectures in Bramha Samaj Mandir, Anakali. In these lectures, Swamiji up held the divine origin of the Vedas and the Transmigration of souls. This upset the Brahma Smajists who do not believe in either. They had believed that Smijists visit would add to their strength and were stunned to find that Swamiji had started proving the truth of tenets they did not believe in. At the same time, the Pauranic people pressed Diwan Bhagwan Das, son of Diwan Rattan Chand, to turn the unorthodox Swami out of his garden. Swamiji was not the man to barter his religion for the privilege of lecturing in Brahma Samaj Mandir or the luxury of staying in Diwan Rattan Chand's Garden. His well wishers secured for him a better and more spacious place-Dr. Rahim khan's Kothi, where arrangements for lectures were also made. The large hearteness of Dr. Rahim Khan may well be judged from the fact that though a muslim, he acceded to their request without protest. There Swamiji started his lectures on various religious topics. He also answered the question of inquirer of all communities, who flocked to his place. The response to Swamiji's preaching was much better here, and the enthusiasm of the educated community in particular ran high. They came to look upon him as a Godsend liberator. To quote a contemporary journal "the man has so much of the angel in him, that it is impossible to over praise him. It is not religious upheaval which this man is desirous of bringing about, he has in view the reformation of the evil customs and usages such as child marriage, etc., which are pervading in the land. He is above all, an advocate, of female education and emancipation, believing that so long as the Indian woman remains ignorant and does not obtain freedom from domestic thraldom, the hope of seeing India make an appreciable progress will never be realised. To be brief, the destruction of ignorance and prejudice among the people, the diffusion of knowledge, the creation of a national union, and evoking out of this union an all embracing civilisation which will make the Indian community a model community, is the first and final aim of this man.

To be continue...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मैंने इस सत्र में अनुभव किया है कि अब तक मैं जो दुनिया के अन्धविश्वास, पाखण्ड में जी रहा था। अब मैं उसे अपने अन्दर से हमेशा के लिए समाप्त कर दूँगा। और इस राष्ट्र को वेदों का संग्रह करवाते हुए फिर अपने राष्ट्र को आर्यावर्त का राष्ट्र बनाऊगाँ। और इस समाज से पाखण्ड़ अधर्म- अन्धविश्वास को समाप्त करने के अथक प्रयास करुगाँ।

मैं तन-मन-धन से आर्य निर्माण करूगां ।

नाम: मनीष कुमार, आयु: 18 वर्ष, कार्य: छात्र, पता: नसीरपुर, उत्तर प्रदेश।

धार्मिक विश्वास की भावना प्रबल हुई, समाज में फैली कुप्रथाओं व पाखण्ड की जानकारी प्राप्त हुई, राष्ट्रवाद की भावना विकसित और नई ऊर्जा शक्ति का संचार हुआ।

वैदिक संस्कृति के कुछ अनसुने तथ्यों को सही प्रकार से समझने का मौका मिला। योग के अष्टागिंक मार्ग को जाना, ईश्वर के संविधान (वेद) की सही रूप में व्याख्या को समझा। मेरा अनुभव मेरी काल्पनिक सोच से कई गुणा अच्छा रहा।

नाम: विपिन कुमार, आयु: 26 वर्ष, योग्यता: एम.ए., कार्य: छात्र, पता: सैदपुर खुर्द, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.।

प्रेरणादायी, राष्ट्र के गौरवमय इतिहास की जानकारी, त्याग व राष्ट्रप्रेम की भावना, वेद, धर्म का ज्ञान। शंकाओं और भ्रांतियों को दूर करने का एक मंच। नास्तिकता और आस्तिकता को विधिपरक समझाने वाला मंच। वास्तव में आर्य का अर्थ और संकल्प समझने का मंच। अविश्वसनीय और प्रेरणादायक सत्र।

जैसा सम्भव होगा, अवश्य सहयोग करुँगा।

नाम: राजेन्द्र सिंह, आयु: 36 वर्ष, योग्यता: बी.एस.सी. बी.एड, पता: सैक्टर-6, बहादुरगढ़।

मुझे इस सत्र में हमारे पूर्वज आर्यों की जीवन शैली तथा उपासना सीखने को मिली जो बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि समाज तथा लोगों में ईश्वर एवं उपासना के बारे भिन्न-भिन्न भ्रांतियां है जो समाज में भटकाती हैं। जिससे हम धर्म और अपने सिद्धान्तों से भटक जाते हैं। इस सत्र से सत्य का ज्ञान हुआ जो अब हम जाने तो धर्म के रास्ते पर चलकर धर्म और राष्ट्र कि सेवा सच्चे समर्पण भाव से करने के लिए ओत-प्रोत हैं।

नाम: सिन्धु कुमार, आयु: 37 वर्ष, योग्यता: स्नातक, व्यवसाय: पञ्चगव्य चिकित्सा, पता: पटना, बिहार।

मान्यवर जी! मुझे यह बताते हुये हर्ष हो रहा है कि मेरे मन में कुछ शंकाये थी जिनका कि आपके सत्र अर्थात् आचार्य के सम्बोधन के माध्यम से निवारण हुआ। सत्र का प्रबंध व समिति के सदस्यों का बहुत सहयोग रहा। इस सत्र के लाभ का अर्थ मैं अपने मित्र सन्दीप आर्य (मोरखी) को धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके माध्यम से ही यह शुभ अवसर मिला। सत्र के माध्यम से आडम्बर व भ्रांतियां दूर हुई हैं।

मैं इस कार्य को आगे बढाने में सहयोग करूंगा- आर्य समाज प्रचार हेतु मैं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा में तन, मन व धन से सामर्थ्य अनुसार सहयोग करूगां। मैं सन्ध्या उपासना व वैदिक हवन को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाउंगा।।

नाम: श्याम सुन्दर, आयु: 30 वर्ष, योग्यता: एम.ए., एम.एड़, पीएचडी, पता: संगरिया, राजस्थान।

In This (Satra) lecture, I got today the basic knowledge related to vaidic knowledge and teachings. I have also understand about previous Hindu myths and statue worship and it's descendants in Hindu society. Therefore I have got more basic understanding about "Arya" principles and teachings. At last I would like to say that Arya Samaj is doing good work which is enhancing basic knowledge about the arya principles.

I would like to cooperate in the field of connecting other persons with Arya Samaj. I would like to educate other sensing persons about Arya Samaj teachings.

Name: Shiv Kumar, **Age:**29 Year, **Quli.:** Phd, **Add.:** Bhali,Himachal Pradesh.

संध्या काल

ज्येष्ठ- मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(19 मई 2019 से 17 जून 2019)
प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से (5.15 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

आषाढ़- मास, वर्षा ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(18 जून 2019 से 16 जुलाई 2019)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।